॥ उपसंहार ॥

उपसंहार

नागर जी का साहित्यकार व्यक्तित्व एक जनवादी व्यक्तित्व है । नागरजी हिन्दी उपन्यास जगत के प्रमुख आधार स्तंभ है । उन्होने जीवन को जिस रुप में देखा जाना पहचाना है ठीक उसी रुप में अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है । सन १९४६ में 'महाकाल' उपन्यास के द्वारा नागरजीने हिन्दी उपन्यास जगत में प्रवेश किया और सन १९८५ तक हिंदी उपन्यास साहित्य को कुल मिलाकर चौदह सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास दिये ।

पहले अध्याय में नागरजी का जीवन वृतांत प्रस्तुत किया है । उनके इस महान व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता पिता के उच्च आदर्श और संस्कार तथा जीवन-संगिनी का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है । हँसते हँसते बाते करने उनका अंदाज और जिंदादिली उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं है रहन - सहन में सादगी सतत संघर्ष शीलता, भोग प्रियता, सतत अध्ययन एवंम चिंतन, महान विचारक, बहुश्रुतता बहुभाषा ज्ञान, श्रृजन धर्मी साहित्यकार, आदि तत्वों से मिलकर जो व्यक्तित्व बनता है उसी का नाम श्री अमृतलाल नागर ।

द्वितीय अध्याय में नागरजी एक विविधमुखी साहित्यकार है । इसका विवेचन प्रस्तुत किया है । नागरजी हिंदी साहित्य जगत में उपन्यासकार के नाते से प्रसिध्द है । उन्होंनो उपन्यास के अतिरिक अनेक विधोंओंका सृजन किया है । जैसे कहानी, नाटक, सर्वेक्षण कार्य, संस्मरण, हास्य व्यंग्य निबंध, बाल साहित्य, जीवनी । नागरजीने जितनी लगन से तथा एकरसता से उपन्यासों का सृजन किया है । उतनी एकरसता उनकी कहानियों मे नहीं है । उनके औपन्यासिक कृतियोंके अवलोकन के बाद कहा जा सकता है की, उन्होने सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास लिखे है उनके उपन्यासो में प्रौढता के दर्शन होते है ।

तृतीय अध्याय में अमृत और विष उपन्यास की कथावास्तु का विवेचन किया है । इस उपन्यास की कथावास्तु दोहरे कथानक को लेकर चली है । इस उपन्यास में व्यक्त दो पिढीयों का संघर्ष अपने समस्त वातावरण के साथ सजीव हो उठा है । लेखक ने इस औपन्यासिक कृतिद्वारा यह

संदेश दिया है जड-चेतनामय, विष-अमृतमय, अंन्धकार- प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ही गती है । समाज मे स्वार्थी संकीर्ण मनोवृत्ती है । मुर्त धार्मिकता तथा लोभ लिप्साओं के जड बंधन है हमे उन्हे तोडना है । यह उपन्यास निस्सन्देह नागरजी की उपन्यास कला का बदा हुआ चरण या आगला सोपान मानना जाना चाहिए ।

चतुर्थ अध्याय में उपन्यास के पात्रोंका चरित्र-चित्रण किया है । इस उपन्यास की पात्र तथा चरित्र-सृष्टी भी इसकी कथावस्तु भाँति अत्यंत विस्तृत तथा व्यापक है । उपन्यास के अधिकांश पात्रोंका संबंध मध्यमवर्गीय जीवन से है । इनमे वृध्द, युवक, पंडित, नेता, समाजसुधारक, शेठ, अफसर आदि सभी तरह की पात्र है । उमेश और लच्छू कुंठित भारतीय युवकोंका प्रतीक है । पुल्लीगुरु कर्मकांडी ब्राम्हणोंका, रुप्पनलाल और बैद्यनाथ पुंजिपति वर्ग का मिस्टर खन्ना समाजसुधारकों का डॉ. आत्माराम देश के सच्चे नेताओं का प्रतिनिधित्व करते है ।

स्त्री पात्रो में भी वैविध्य है । इनमें आधुनिक विचारोवाली पुरानी विचारोवाली, समाज सुधारक, वेश्या आदि तरह के पात्र है । इनमे उषा, रानी, बोनो आधुनिक नारियोंका, वहीदन, मिसेस माथुर, मि. अशरफ आदि वेश्याओंका, रमेश की माँ, रानी की माँ और मिसेस खन्ना ममतामयी माँ का प्रतिनिधित्व करती है । उपन्यास का चरित्र चित्रण अंतरंग और बहिरंग दृष्टी से सफल बना है ।

पंचम अध्याय में अमृत और विष उपन्यास में सामाजिक जीवन के वातावरण निर्मिती का चित्रण सजीव रुप में हुआ है । इस उपन्यास में ऐसे अनेक चित्र है जो देशकाल की व्यापकता को प्रस्तुत करते है । नागरजी ने अपनी अधिकांश रचनाएँ लखनऊ की पृष्ठभूमि पर लिखी है । इसकी भौगोलिक सीमा भी लखनऊ की धरती से जुडी है । लेखक ने इस उपन्यास में विक्टोरिया युग से लेकर देश के स्वातंत्र्योत्तर युग तक की कथा कही है । इस स्वातंत्र्योत्तर युग मे जो तमाम समस्याएँ हमारे सामाजिक जीवन की सतह पर अकस्मात उतराने लगी है उनका भी गंभीर विश्लेषण किया है । स्वातंत्र्योत्तर युग का कोई भी महत्वपूर्ण प्रसंग इस उपन्यास में लेखक की दृष्टी से छूटने नहीं पाया है ।

षष्ठ अध्याय में इस उपन्यास में वर्णित भाषा शैली का विवेचन किया है । नागरजी ने पाण्डित्यपूर्ण, व्यंग्यमुक्त भाषा से लेकर प्रादेशिक भाषा तक का प्रयोग यथावश्यक रूप में किया है । पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ब्रजभाषा उर्दू मिश्रित और कही अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है ।

लेखकने जिस यथार्थवाद को अपना कथ्य बनाया है उसे हास्य और व्यंग का स्पर्श देकर अत्यंत तीखा और प्रबल बना दिया है । सामान्य जनो की बातचीत और कथोपकथन में प्रयुक्त उनकी लच्छेदार भाषा और बोलचाल की यथार्थ शैली सीधी मन में उतर जाती है ।

सप्तम अध्याय में अमृत और विष उपन्यास का उद्देश क्या है इसपर विवेचन किया है । इसमें सामाजिक यथार्थ का सांगोपांग, तटस्थ, निर्भीक और मार्मिक चित्रांकन किया है । मध्यमवर्गीय भारतीय समाज अपनी बौध्दीकता, जर्जर जिजीविषा, अंधविश्वासो में लिपटी हुई धार्मिकता, प्रजातन्त्र के नामपर पनपता हुआ स्वार्थान्ध, घुटती हुई वर्तमान युगीन चेतना के बिम्ब प्रतिबिंबित हुए है । नागरजी ने सामयिक समस्याओं के साथ जीवन के शाश्वत प्रश्नो पर भी विचार व्यक्त किया है । अरविंद शेकर का समूचा संघर्ष हेमिंग्वे के बुढे मछेरे के संदर्भ मे प्रस्तुत किया है । कर्म करने में ही मनुष्य की सार्थकता है इसप्रकार स्वंय नागरजी अरविंद शेकर की सृजन प्रेरणा का प्रेरक बिन्दु निरन्तर प्रगतिशील जीवन और मानव समुदाय के प्रति आस्थावादी दृष्टी है । गीता की भाँती निरन्तर कर्म करने का महत् संदेश देने में ही उपन्यास की सफलता है ।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

अनुसंधान के प्रारंभ में जो प्रश्न मेरे सामने थे उन प्रश्नो के उत्तर निम्न प्रकार है ।

१) क्या 'अमृत और विष' उपन्यास सफल समस्याप्रधान उपन्यास है ?

'अमृत और विष' सफल समस्याप्रधान उपन्यास है ।

२) 'अमृत और विष' उपन्यास में किन समस्याओंका चित्रण किया है ? और किस समस्याका सबसे प्रभावी चित्रण हुआ है ?

'अमृत और विष' उपन्यास में नवयुवकों की कुंठा पुरानी पीढी के प्रति अनास्था, राष्ट्रीय भावना,

समाजसेवा वृत्ति, दिशाहिनता, कालाबाजार, लूट पाट, सांप्रदायिकता, रुढिवादिता, विवाह समस्या, आर्थिक समस्या आदि समस्याओंका सफलता से चित्रण किया है । इस उपन्यास में व्यक नई और पुरानी पीढी का संघर्ष अपने समस्त वातावरण के साथ सजीव हो उठा है ।

३) 'अमृत और विष' उपन्यास की शैलीगत विशेषता क्या है ?

'अमृत और विष' उपन्यास में दोहरे कथानक की सृष्टी की है । नागरजी की यह शैली हिन्दी उपन्यास मे सर्वथा भिन्न और नयी है ।

४) 'अमृत और विष' उपन्यास में भारतीय जीवन के किस कालखंड का चित्रण है ?

इस उपन्यास में नागरजीने विक्टोरिया युगसे लेकर आज तक के भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का उत्थान और पतन उनके अंतर्गत पनपनेवाली राजनिती का सांस्कृतिक, आर्थिक, नैतिक मान्यताओं का विवेचन किया है ।

अमृत और विष एक बृहत सामाजिक उपन्यास है । इसमे दोहरे कथन की सृष्टी है । लेखक ने इसमे मुख्य और गौण कथाओं का प्रबंध कौशल्य से संघटन किया है । उपन्यास पढते समय पाठक आगामी घटना का अभास नही पा सकता । इससे उपन्यास की कथावस्तु में रोचकता आ गई है । इस उपन्यास के पात्र वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व करते है और व्यक्तिगत विशेषताओं से

युक्त है । यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कालीन परिस्थितियों का दरपन है । इसमे नागरजीने जनसाधारण और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है । इसकी रचना सामाजिक उद्देश से की गयी है । इस प्रकार अमृत और विष उपन्यास सभी तत्वों की दृष्टी से पूर्ण सफल उपन्यास है ।